रात्री क्लास ओम शान्ती 30-11-66

यह तो छोटे समझते हैं करके महिमा भी करेंगे फिर भी कहेंगे ड्रामा अनुसार जोक सविसतो होनी है वो ही होगी।कहा ऐसे चरे रवरे बकवाद भी करते होंगे।फिर समझा जाता है कि आज जाकपहट हुआ वो ड्रामा क्लीन अनुसार पहट हुआ।पुरुषार्थ फिर सविस का ही करना है।पुवाइन्टस तो बच्चों को बहुत ही मिलती है।घर में भी दो अथवा मन्दिर टिकनें आदि में भी जाकर सविस कर सकते हैं।परचे तो छपवाये ही हुये हैं पतित खण्ड गयो है यो परमपिता परमात्मायुवाच मां परमात्मा को ही याद करो तो जन्मजन्मान्तरों के ही पाप मिट जावें।बाते भी है पतितत पावन सदगती दाता एक ही है।तो यह इनाम आदि करने जाते हैं उनसे क्या फायदा?नई दुनिया कहा ही जाता है स्वर्ग को।अपन भी पहले-2 बेसमझ थे अब ही समझ आई है।तो ऐसे पत्रे छपाये बाटने चाहिये।सदगती दाता पतित पावन सुपरिम सतगुरू तो एक ही है।जिसको ही भगवान कहा जाता है बिना समझाये के जरा भी कोई भी समझ ही नही सकते है।याद सब भगवान को जरूर ही करते हैं।भगवान है ही दुख हरता सुख करता।भगवान सुख करता कहा तो जरूर भगवान आवेंगे नां।तब जब की पुरानी दुनिया का अन्त नई दुनिया की आद होगी।भगवान ही नई दुनिया का रचता है।तुम बच्चे सुन-2करके पक्के हो गये हो।कुछ नां कुछ विचार सागर मथन कर ऐसी ऐसी युक्तियां निकालनी चाहियें कि किस प्रकार पर्चे छपाने चाहियें अभी ही तुमको चांस है प्रदर्शनी में समझाने का।कब कहा जाओ कब कहां।बाबा भी कहते हैं मेरे बच्चों को ही ज्ञान सुनाओ।विचार चलता ही रहता है क्या?चित्र देवें जो खुद ही समझ जावें।परन्तु नही गया भी हुआ है गुरू बिना घोर अंधेरा।समगुरू के तो बच्चे तुम हो।तो समगुरू अथवा उनके बच्चों बिना मनुष्य को अंधेरके में है।सारी जिम्मेवारी तुम्हारे पर ही आये ठहरती है।पुरुषार्थ करवाया जाता है फिर जो तकदीर में है ऐसी ही तदवीर भी करते हैं?चिन्तन तो अन्दर में रहता ही है नांकि कोई को कैसे बैठ कर समझावें। सब बच्चों को ईश्वरिय मत मिलती है।ईश्वर की मत भी कोई-2नही मानते हैं।बच्चों को तो अच्छे ही कर्म करने है।अच्छे कर्म सीखने से जन्मजन्मान्तर ही प्राप्त बन जाती है।सबसे अच्छा कर्म है बाप का परिचय देना। वे फिर जरूर बाप से स्वर्ग का वर्सा भी मिलेगा।हर एक को अपना चार्ट देखना चाहिये।सारे दिन में कितनी सारी की कोई आसुरी काम तो नही किया है।अभी तो बाप सम्मुख है सिक्षा देरहे है।बच्चे भी समझते है, वो बाप की ही मत पर चलना चाहिये।ड्रामा अनुसार सावधानी दी जाती है फिर रात को सूझा जाता है, ड्रामानुसार जो हुआ सो वो ठीक ही हुआ।पाप नां करें सो पुरुषार्थ कराया जाता है।और क्या कर सकते ओम शान्ति 2-66रात्री क्लास:-लक्कीस्टेट ज्ञान सितारे तुम हो।तुम्हारा चार्ट नूधा हुआ है।लक्क और अनलक्क है नां। सिर्फ बाबा को भेंट में नही ला सकते हैं।सुर्य वंशी राजधानी को कहेंगे लक्कस्टेट।यह बातें तुम ही जानते हो यह ड्रामा अथवा सृष्टी चक्र है।चक्र जरूर ही फिरता है।इसलिये ही स्वदर्शन चक्र धारी कहा जाता है। स्वदर्शन चक्र से आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है।रचता और रचना की आद मध्य अन्त का ज्ञान जिसको प्राप्त हुआ वो ऊंच ते ऊंच पदवी धारी कहा जाता है।तुम रचता द्वारा रचना को भी जान गये हो।त्रिकाल दर्शी दोनों ही कालों का ज्ञान है।नालेज फुल कहा जाता है तो फिर किसीको तो नालेज देगें नां।परमात्मा को बीज रूप कहा जाता है वो ही सत है चैतन है।बाप के पास जो ज्ञान है वो ही तुमको भी मिलती है।सिर्फ गीता का नाम बदलने से सारा काम ही बिगाड दिया है।ड्रामानुसार फिर भी ऐसे ही लिखेंगे।किसकी मतभर लिखवाआसुरी मत पर।जो आसुरी मत पर बने हुये शास्त्र पढते -2आसुरी ही सम्प्रदाय बन गये हैं।यह सब गिराने ही वाले है।फिर बाप आकर उठाते है।अंकित भंग ड्रामा हैं।नफरत की बात नही है।यह तो बना बनाया ड्रामा है।जिसको हम जानते है ड्रामा को जानने से स्वदर्शन चक्र को जानने से हम कितना ऊंच पद पाते हैं।यह बना बनाया ड्रामा है इसको कोई को पता नही है।बाप ही बताते है।कहते भी हैं भागीरथ को तो मनुष्य का रथ चाहिये नां।कृष्ण देवता का का तो है नही।सकते है बाप ने कहा है कि मैं तो साधारण मनुष्य तन में आता हूं मनुष्यों को देवता बनाने लिये।हर एक बात के लिये ही समझाते हैं बाप को याद क

करो तो आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेगी। कोई भी शंसय हो वो चलते-2 मिट जावेगा। जब तक मिठे तब तक कमाई तो करते रहो नां। बाकी शंसय को किनारे रखो। तुम याद की यात्रा नां भूलो। मूझ कर छोडो नही कहते है ब्रहमा के तन में क्यूं? मनुष्य को तुमने देवता क्यूं बनाया है? अच्छा तुमको बाप कहते हैं है आत्मा फिर कोई दवारा भी कहते हैं कहते हैं अपने को आत्मा समझ मामऐकम याद करो। सृष्टी चक्र को याद करो। तमोप्रधानसे सतोप्रधान बनना है। मन्त्र तो हाथ में लो। कल्प पहले सुशय आद आये होगें वो आवेंगे। तुमको समझानाएहै भगवान तो निराकार है। फिर किसीके भी तन दवारा समझो। दक्षप्रजा पिता का भी नाम है नां। मूल बात है पतित पावन बाप को याद करो। यह सब ब्राहम्ण हैं नां। ब्राहम्णों को ज्ञान मिलता है। फैमली नां बने तो डण्डे का वसी कैसे मिले। यहां फैमली है नां। मात पिता चाहिये नां। गुरु की बात नही है। पहले-2 बाप ही अपना बनाते हैं फिर पढा कर सदगती में ले जाते है। बाप भी बने टीचर भी बने। सच्चा सतगुरु बन साथ में भी ले कर जावे वो तो एक के बिना कोई बन नही सकता है। पाइन्टस तो बहुत ही समझायी जाती है यह बारूद है नां। मेहनत तो है याद में रहने की। ओम

2-12-66:-रात्री क्लास-जो बाप को नही मानते हैं उनको समझाना है यह जो कहते हैं सब भाई-2 है यह मानते हो? कुछ तो मानेंगे नां। कोई को तो रचता कहेंगे ही। सृष्टी को रचने वाला कोई तो होगा। तुमने क्षित्री को ऐडाप्ट किया है तो तुम रचता हो नां। आत्माओं का भी कोई बाप होगा नां। फिर उनको समझाना चाहिये बाप की रचना रचनी है नई दुनियाकीी पुरानी दुनिया जो है उनको फिर नया बनावेगें। कोई नां कोई रीत से उंगली लगानी ही है। मल युध लडते हैं नां बडा युक्ति से उंगली लगाते हैं। यह भी तुम बच्चों को समझाना है गाड फादर को तो सब बुलाते है। तो सब भाईयों का बाप जरूर होगा। वो कहां रहते है? सभी आत्मायें कहां से आती है? यह सब समझने की बात है। ड्रामा को शुरू से अन्त तक जानना चाहिये। नैचर को मानने वाले समझेंगें नही। जितना हो सके कोशिश करनी चाहिये। फिर बकवास करने वाले को छोड देना चाहिये। बाप को मानते जरूर है। परन्तु जानते नही है। आत्मा घडी-2 पुकारती है। क्यूंकि बाप ने आकर आ आत्माओं को दुखसे छुडाया था। आत्मा निर्लेप हो तो फिर सुख दुख की भासना नही ले सकती है। आत्मा में ही संस्कार रहते है। मन बुधी भी आत्मा में ही है। यह शरीर तो जड है। फीलिंग आद सब आत्मा में आती है। जब आत्मा अलग है शरीर ही नही है तो फीलिंग क्या होगी? अभी यह युध चल रही है। इसका नाम ही है युधस्थल। युध है ही 5 विकारों के साथ। जिसके ही कारण मनुष्य बुधु बन गये है। इस ज्ञान के बिना सब ही वंध नाट अपैनी है। फादर दवारा ही ज्ञान मिलता है। बाकी सब के पास है ही भक्ति। पतित पावन ज्ञान का सागर एक ही बाप है। और तो शास्त्र आद जो भी है सब हुनर सिखाते है उनसे कोई फायदा नही है। जब ज्ञान से सदगती होनी है फिर गंगा में क्यूं जाते है? बुधी ऐसी है जो खुद भी समझ नही सकते है। बच्चों को पाइन्टस बहुत ही मिलती है। इसमें अहंकार की बात नही है। अन्धों की लाठी बनना तो फैज है। जो होशियार होते है उनकी कमाई जासती होती है। बाप कहते है कमल फुल समान पवित्र रहना है। बहुत जन्मों का अन्त का जन्म है। ज्ञान को सुमरण कर हर्षित रहना है। ज्ञान देने वाला है ही बाप। इन बातों को स्मरण कर खुशी में रहना है। बाकी कर्म भोग तो भोगने ही है। अन्त तक कुछ नां कुछ होता ही रहेगा। शरीर को कुछ नां हो कर्मातीत अवस्था हो जावे। तो फिर शरीर ही नही रहनाएचाहिये। इसलिये कुछ ना कुछ निशानी रहती है। सतयुग में निरोगी काया होती है। यह पुरुषोतम युग है। पतित पावन से पावन बनते हो। छी-2 आत्मा को पुरुषोतम थोडेई कहेगें। यह है ही नया ज्ञान। सारी दुनिया गीता को मानती है। परन्तु कहते है कृष्ण ने गाई है। जो कल्प पहले ब्राहम्ण बने थे वो तो जरूर ही बनेगे। और वसी लेंगें। अहो प्रभु तेरी लीला, प्रभु तेरी गत मत सबसे न्यारी यह गायन तो है नां। यह सभी प्रैक्टीकल में कहेंगें तो सही नां। माया का पाम्प बहुत है। सबको खैंचते है। समझते है यह तो स्वर्ग है। लेकन यह माया का पाम्प है ओम